अजायब बानी

मासिक पत्रिका

अक्टूबर-2021

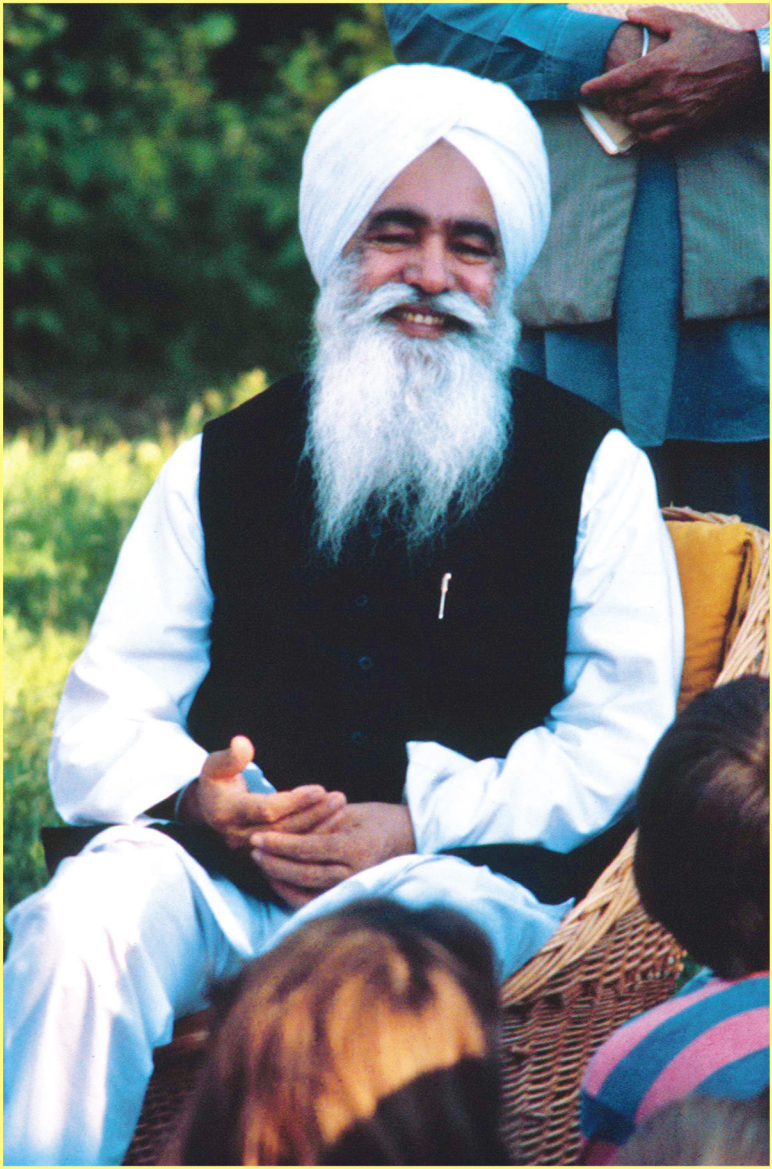

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां अंक–छठा अक्टूबर–2021

सतसंग – परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

08 फरवरी 1987

84 आर.बी. राजस्थान

यह दुनिया रंगीला बाग हैं

शेख फरीद साहब की बानी

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे सदा ही संसार में आकर हमें होका देते हैं कि यह संसार चलो–चली का मेला है, यहाँ कोई सदा नहीं रहा। हमें पता नहीं कि हम पिछले जन्मों में कितनी पत्नियाँ बनाकर छोड़ आए हैं, कितने पति बनाकर छोड़ आए हैं, कितने घर बनाए, कितने बच्चे पैदा किए और हम कहाँ–कहाँ फिरे हमें याद नहीं अगर किसी को याद भी हो और वह उस घर में जाकर दाखिल हो जाए तो क्या उस घर के लोग उसे घर में घुसने देंगे? फौरन कहेंगे कि हम तुझे नहीं जानते तू चोर है, ठग है।

मुझे बाबा बिशनदास जी से 'दो–शब्द' का भेद मिला था, आप संतुष्ट नहीं थे। आप कहा करते थे कि मंजिल काफी ऊँची है लेकिन मेरे पास इससे ज्यादा कुछ नहीं हैं। जब मुझे पेशावर में महाराज सावन सिंह जी की जानकारी मिली तो उस समय मैं आर्मी में नौशरा में था। मैं बाबा बिशनदास जी को लेकर महाराज सावन सिंह जी के चरणों में पहुँचा। बाबा बिशनदास जी के नज़दीक के गाँव में एक मुसलमान फकीर फत्ती रहता था, वह भी हमारे साथ हो गया। बाबा बिशनदास जी ने महाराज सावन सिंह जी को मेरे बारे में बताया कि इसने बहुत कर्मकांड, जप–तप, धूनियाँ, जलधारा वगैरह किया हुआ है। मैंने इसे 'दो–शब्द' का भेद दिया है। महाराज सावन ने बहुत

गौर से सुना और कहा, ''जीव जन्म–जन्मांतर से किसी न किसी तरफ लगा हुआ है लेकिन मुक्ति नाम में है। नाम पूरे गुरु से मिलता है, नाम कोई अक्षर नहीं।'' महाराज सावन सिहं जी अक्सर कहा करते थे, ''अगर नाम अक्षर होता तो चरखा कातने वाली पाँच साल की लड़की भी नाम दे सकती थी। नाम तवज्जो होती है, महात्मा हमारे अंदर नाम टिका देते हैं।''

हमें पता है कि पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है, अंदर जाने वाला ही हमें अंदर लेकर जा सकता है। फत्ती फकीर ने महाराज सावन सिंह जी से कहा, ''महाराज जी! आपका एक जामा राजा फरीदकोट के घर भी हुआ है।'' महाराज सावन ने कहा, ''मैंने कई जामों में कड़ाके की गरीबी भी देखी है अगर आज मैं जाकर उन महलों पर दावा करूं कि ये महल मैंने बनाए हैं क्या कोई मुझे उन महलों में घुसने देगा?''

इस संसार में दो किस्म के इंसान आते हैं। एक वे होते हैं जो यह कहते हैं कि आप किसी का बुरा न सोचें, सबके अंदर परमात्मा बैठा है अगर किसी को नेकी का ईनाम या बुराई का दंड देना है तो परमात्मा ने ही देना है। दूसरे इस किस्म के इंसान भी संसार में आते हैं जो लोगों को बाँटकर चले जाते हैं। वे अपने–अपने तरीकों के मुताबिक अनेकों ही रब बनाकर चले जाते हैं। आजकल समाजो में यही हो रहा है।

सन्त–महात्मा जब संसार में आते हैं तो वे हमें बताते हैं कि हम सबका परमात्मा एक है, उससे मिलने का साधन और तरीका भी एक है। हम सब उस परमात्मा के बच्चे हैं लेकिन परमात्मा बाहर किसी भी कर्म–धर्म से नहीं मिलता, परमात्मा जब भी मिलता है अंदर जाकर ही मिलता है।

आप महात्माओं की जिंदगी पढ़कर देखें! गुरु नानकदेव जी महाराज के दो बच्चे, पत्नी और माता–पिता थे लेकिन जब आपके दिल के अंदर यह ख्याल पैदा हुआ कि परमात्मा से मिलना चाहिए तो आप अमली तौर पर

इसमें कामयाब हुए। आपने बहुत से लोगों को मुफ्त में 'शब्द–नाम' का भेद दिया। आपने पत्नी या माता–पिता की परवाह नहीं की। आपने सारी दुनिया में खुला होका दियाः

घर में घर दिखाए दे सो सतगुरु पुरख सुजान
पंज शब्द धुनकार धुन ते वाजे शब्द निशान

महात्मा देह में बैठकर कभी यह नहीं कहते कि हम कोई गुरु या पीर हैं। महात्मा कहते हैं कि आप हमें अपना भाई, दोस्त या जो मर्जी कह लें। माता–पिता ने जो नाम दिया है आप उस नाम से भी बुला सकते है, बाहर की बातों से कोई फर्क नहीं पड़ता। वे हमें ये जरूर कहते हैं कि आप अंदर जाकर खुद सच्चाई को देखें। हमने जो किया है वह आप भी कर सकते हैं।

हमारे सतगुरु महाराज कृपाल हमेशा कहा करते थे, ''जो काम एक आदमी कर सकता है उस काम को दूसरा आदमी भी कर सकता है।'' महात्मा की जिंदगी पढ़ने से हमें पता लगता है कि उनके दिल में कितनी तड़प थी। अगर वे अमीर घर में पैदा हुए तो उन्होंने अमीरी की परवाह नहीं की, अमीरी को लात मारकर उन्होंने 'शब्द–नाम' की कमाई की। दुनिया को ऊँचा नहीं समझा परमात्मा को ऊँचा समझा। उन्होंने लोक–लाज की परवाह नहीं की अगर वे गरीब घर में पैदा हुए तो वे लोगों पर बोझ नहीं बने। उन्होंने अपने दस नाखूनों से मेहनत की, अपना पेट पाला। रविदास जी सारी जिंदगी जूतियाँ बनाते रहे, साध–संगत की मुफ्त सेवा करते रहे। कबीर साहब ने सारी जिंदगी ताना बुना।

शाह बलख बुखारा को परमार्थ का शौक था। शाह बलख बुखारा का ऐसा सौभाग्य बना कि एक रात वह अपने महल में सोया हुआ था, उसे लगा कि कोई आदमी महल के ऊपर चल रहा है। बलख बुखारा ने उससे पूछा, ''तुम कौन हो?'' उस आदमी ने कहा, ''मैं सारबान हूँ, मेरा ऊँट खो गया है मैं ऊँट ढूंढ रहा हूँ।'' बलख बुखारा ने कहा, ''यह बादशाह का महल है

यहाँ चिड़िया नहीं फटक सकती तो यहाँ ऊँट कैसे आ सकते हैं?'' कबीर साहब ने कहा, ''तू दिल में परमात्मा से मिलने का शौक और तड़प रखता है लेकिन फूलों की सेज पर सोता है, तूने कभी यह सोचा है कि फूलों की सेज पर रंगरलियाँ मनाते हुए कभी परमात्मा मिला है?'' बलख बुखारा आला पात्र था, उसके लिए इतना ही बहुत था।

बलख बुखारा रात की घटना से परेशान था, सुबह कचहरी लगाकर बैठा। कबीर साहब फिर एक रोबदार आदमी का रूप धारण करके कचहरी के अंदर चले गए किसी के रोकने से नहीं रूके। कबीर साहब ने आगे जाकर पूछा, ''मैं इस मुसाफिर खाने में रात काटना चाहता हूँ।'' उन लोगों ने कहा, ''तू पागल है यह तो राजमहल है मुसाफिर खाना नहीं।'' कबीर साहब ने पूछा, ''यह महल किसने बनवाया था?'' उन्होंने कहा कि यह महल हमारे बड़े बुजुर्गों ने बनवाया था। कबीर साहब ने पूछा, ''यहाँ इससे पहले कितने राजा–महाराजा रहे हैं?'' उन लोगों ने काफी कुछ गिनकर बताया। कबीर साहब ने कहा, ''यह फिर मुसाफिर खाना नहीं तो और क्या है? जब वे लोग नहीं रहे तो तुम कौन सी आशा लगाकर बैठे हो?'' महात्मा संसार में आकर हमें बहुत प्यार से बताते हैं, ''सज्जनों! खाली हाथ आए हैं और खाली हाथ चले जाना है, हम किसकी आशा लगाकर बैठे हैं, आगे किसने हमारी मदद करनी है?'' महात्मा के अंदर कमाल की तड़प होती है।

शाह बलख बुखारा सारी दुनिया में घूमा कि कोई ऐसा है जो मुझे 'शब्द–नाम' का भेद दे? किसी ने उसे बताया कि काशी में जुलाहा जाति के कबीर साहब हैं। पहले लोक–लाज थी आखिर उसने कबीर साहब के पास जाकर कहा, ''मुझे कुछ दें?'' कबीर साहब ने पूछा, ''तू कौन है और कहाँ से आया है?'' उसने कहा, ''मैं बलख बुखारा का बादशाह हूँ।'' कबीर साहब ने कहा, ''मैं एक गरीब जुलाहा हूँ और तू शाह बलख बुखारा है, तेरी मेरी गुजर कैसे होगी?'' शाह बलख बुखारा को परमार्थ का शौक था,

वह आला पात्र था। उसने कहा कि मैं बादशाह नहीं भिखारी बनकर आपके दरवाजे पर आया हूँ, मुझे जो भी रूखा–सूखा देंगे मैं वैसा ही खा लूँगा। आप मुझे जो काम बताएंगे मैं उस काम को श्रद्धा–प्यार से पूजा समझकर करूंगा।

शाह बलख बुखारा छह साल तक काम में आपकी मदद करता रहा। लोई, कबीर साहब के साथ काम में हाथ बँटवाती थी। लोई ने कहा कि यह एक बादशाह होकर हमारे दरवाजे पर काम कर रहा है हम जो रूखा–सूखा दे देते हैं वह खा लेता है आप इसे कुछ दें। कबीर साहब ने कहा कि अभी बर्तन तैयार नहीं। लोई ने कहा, ''मैं कैसे समझूँ कि अभी बर्तन तैयार नहीं?''

कबीर साहब ने लोई से कहा कि तू कुछ छिलके वगैरह लेकर छत पर चली जा, जब मैं इसे बुलाऊँगा तब तू इसके ऊपर छिलके फैंक देना। जब कबीर साहब ने बलख बुखारा को अंदर बुलाया तो लोई ने उसके ऊपर छिलके फैंक दिए। बलख बुखारा बहुत नाराज होकर कहने लगा, ''अगर मैं बलख बुखारे में होता तो तुझे देख लेता।'' लोई ने कहा कि मैं तो इसे बहुत प्रेमी समझती थी लेकिन यह अंदर से कैसा है?

इस तरह छह साल और बीत गए। लोई तो तर्जुबा कर चुकी थी वह क्या कहती। कबीर साहब अंदरूनी राज़ से वाकिफ थे। कबीर साहब ने कहा, ''अब बर्तन तैयार है।'' लोई ने कहा, ''मैं कैसे समझूँ मुझे तो यह पहले की तरह ही लगता है।'' कबीर साहब ने कहा कि तू अब गंद वगैरह लेकर ऊपर चढ़ जा। लोई ने ऊपर से गंद फैंक दिया। बलख बुखारा सब कुछ देख चुका था, उसने ऊपर की तरफ देखकर कहा, ''मेरे ऊपर गंद फैंकने वाले तेरा भला हो मैं तो इससे भी गंदा हूँ।''

कबीर साहब ने जब उसे साफ देखा तो नाम दे दिया। जब दिल में तड़प हो तो क्या वक्त लगता है? वक्त तो तब लगता है जब हम नाम प्राप्त कर लेते हैं लेकिन हमारे अंदर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार उसी तरह रहते हैं तो नाम किस तरह प्रकट होगा? अंदर तो दुनिया भरी हुई है।

आपके आगे फरीद साहब की बानी रखी जा रही है। सूफी सन्त फरीद साहब मुसलमानों में पैदा हुए थे। गुरु अर्जुनदेव जी ने गुरु ग्रंथ साहब में उन महात्माओं की बानी दर्ज की है जो परमगति को प्राप्त थे, जिनका रास्ता पाँच शब्द का था। फरीद साहब के दिल में बचपन से ही बहुत तड़प थी। आपने बहुत सारे तप और कर्मकांड किए लेकिन परमात्मा नहीं मिला, आपको बिछोड़े का दुख था। बिछोड़े का दुख वही समझ सकता है जो बिछोड़े से वाकिफ हो। जिसे बिछोड़े का पता नहीं वह क्या समझ सकता है? हम यहाँ बच्चों के लिए रोते हैं। धन चला जाए तो धन के लिए रोते हैं। पत्नी पति के पीछे रोती फिरती है, पति पत्नी के पीछे रोता फिरता है लेकिन ऐसे भी इंसान आते हैं जो परमात्मा के बिछोड़े में रातों को जागते हैं और रोते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

सुखिया सब संसार है खाए और सोए
दुखिया दास कबीर है जागे और रोए

दुनिया खाती है और सोती है लेकिन मुझे मालिक से मिलने का दुःख लगा हुआ है, मैं रात को जागता हूँ और रोता हूँ। इसी तरह फरीद साहब कहते हैं जिस दिन मेरा जन्म हुआ अगर मेरी माता ने मेरा नाड़ुआ काटने की बजाय मेरा गला काट दिया होता तो अच्छा होता। मैं जिंदगी में इतने दुःख न सहता, मैं बिछोड़े का दुःख भी न सहता अगर हम सबके ऐसे ख्याल हों तो हम फौरन परमात्मा से मिल सकते हैं।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''प्रेमी आत्माओं का सन्तों के पास आना इस तरह है जिस तरह खुष्क बारूद को आग के नज़दीक कर दें।'' लेकिन हम गीले बारूद हैं जिस तरह हमें सतसंग की तपिश मिलती है थोड़ी बहुत कमाई करते हैं तो हमारे अंदर भी दुनिया की तरफ से खुष्की हो जाती है और हमारी आत्मा परमात्मा की तरफ जाग जाती है। गौर से सुनेंः

फरीदा जे देंह नाला कपया जे गल कपह चुख।।
पवन न इतीं मामले सहां न इती दुख।।
चबण चलण रतंन से सुणीअर बह गए।।
हेड़े मुती धाह से जानी चल गए।।

फरीद साहब हमारी हालत बयान करते हैं कि जिस तरह बालपन सदा नहीं रहता, जवानी सदा नहीं रहती बुढ़ापा आ जाता है। आप बुढ़ापे की हालत बयान करते हैं कि जिस तरह हमारे दाँत सख्त चीज़ों को चबा लेते थे वे दाँत निकल जाते हैं। प्रकाशमान नेत्र बंद हो जाते हैं। कानों से कम सुनाई देने लगता है तो हम बनावटी यंत्रों से कितनी देर सुनेंगे? पैरों से जितनी ऊँची–ऊँची छलाँगे लगा लेते थे ये पैर भी अब रह गए हैं। हमारी देह धाह मार कर रोती है कि मेरे साथी जो मेरे साथ ही पैदा हुए थे ये मेरा साथ छोड़ गए हैं। कभी किसी डाक्टर के पास जाते हैं तो कभी किसी डाक्टर के पास जाते हैं। फरीद साहब कहते हैंः

दंदा कन्ना तिन्हां दित्ती हार
देख फरीदा नस गए ओह मुड कतीन दे यार

दाँत, कान, हाथ, पैर जो शरीर के साथ ही पैदा हुए थे वे हमारे जीते जी ही हमारा साथ छोड़ जाते हैं। जब हमारे शरीर के अंग ही साथ नहीं जाते तो हम जिन रिश्तेदारों की आशा लगाकर बैठे हैं ये कब साथ देंगे? इसलिए नाम जपने में ही फायदा है।

फरीदा बुरे दा भला कर गुस्सा मन न हढाय।।
देही रोग न लगई पलै सभ किछ पाय।।

सन्त हमें यह संदेश नहीं देते कि आप किसी के साथ लड़ाई–झगड़ा करें। कोई मजहब यह नहीं सिखाता कि आप किसी के साथ घृणा करें या बुरा व्यवहार करें। सब धर्मग्रंथ हमें परमात्मा के साथ जोड़ते हैं। सबने

मानवता के गीत गाए हैं कि सबके अंदर परमात्मा है। अगर कोई आपका बुरा करता है फिर भी आप उसका बुरा करना तो क्या बुरा करने के बारे में सोचें भी नहीं। परमात्मा आपके पास आ जाएगा क्योंकि परमात्मा खाली जगह ढूंढता है। मेरे गुरुदेव जी महाराज कहा करते थे, ''भगवान इंसान की तलाश में हैं लेकिन इंसान बनना बहुत मुश्किल है। आप इंसान बनकर देखें परमात्मा आपके पास बिना बुलाए ही आ जाएगा।''

फरीदा पंख पराहुणी दुनी सुहावा बाग।।
नौबत वज्जी सुबह स्यों चलण का कर साज।।

फरीद साहब कहते हैं कि **यह दुनिया रंगीला बाग है**, यहाँ गोरे काले बूटे लगे हुए हैं। सन्त–महात्मा यहाँ अपनी नौबत भी बजा रहे हैं कि प्यारेयो! तैयार हो जाएं, सदा ही आगे की तैयारी याद रखें, यहाँ सदा कोई नहीं रहा। जिस तरह बाग में चम्बा, आम, अंगूर अनेकों प्रकार के बूटे लगे हुए हैं। जब सुबह होती है तो मालिक अपनी तार खड़काता है कि पक्षी उड़ जाएं लेकिन समझदार पक्षी मालिक के तार खड़काने से पहले ही उड़कर चले जाते हैं क्योंकि उन्हें पता है आखिर हमने यहाँ से उड़ना ही है।

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे इस बाग के रंगों को देखकर इसमें अपना मन नहीं लगाते, वे हमेशा उन पक्षियों की तरह इस संसार में रहते हैं। हम भी इस रंगीले बाग में पक्षियों की तरह हैं जिस तरह पक्षियों का घौंसला कभी कहीं तो कभी कहीं होता है। हमारी हालत भी इसी तरह है पता नहीं कहाँ–कहाँ घर बनाकर छोड़ आते हैं फिर बनाते और फिर छोड़ जाते हैं।

फरीदा रात कथूरी वंडीऐ सुत्तयां मिलै न भाओ।।
जिंनां नैण नींद्रावले तिंनां मिलण कुआओ।।

आप कहते हैं कि परमात्मा इंसानी जामें में ही अपने प्यारे बच्चे सन्तों को नाम की कस्तूरी देकर भेजता है। जो लोग आलसी हैं वे सोचते ही रह

जाते हैं। वे कहते हैं कि हमें पता है कि नाम के बिना मुक्ति नहीं है। हम यह काम कर लें, वह काम कर लें फिर जाकर नाम ले आएंगे। परमात्मा की प्लेनिंग का किसी को पता नहीं कि परमात्मा की क्या प्लानिंग है? ऐसे आलसियों को कस्तूरी किसी भाव से नहीं मिलती। हम जिस तन का मान करते हैं उस तन ने भी यही रह जाना है। धन उतनी देर ही हमारा है जितनी देर हमारे गले से आवाज निकलती है, जब आवाज निकलनी बंद हो जाती है तो कौन किसे धन देता है? कबीर साहब कहते हैंः

कौडी कौडी जोड़ के जोड़या लख करोड़
मरती वरया रे नरा लई लगोंटी तोड़

मरते वक्त घर के लोग जेबें टटोलते हैं। आपको पता ही है कि मरते वक्त क्या–क्या करते हैं? कोई कहता है कि इससे वसीयत करवा लें। कोई कुछ तो कोई कुछ कहता है। हम यह सब आँखों से देखते हैं लेकिन हमारे कानों पर जूं तक नहीं रेंगती।

फरीदा मैं जानयां दुख मुझ कू दुख सबाइऐ जग।।
ऊचे चढ़ कै देखया तां घर घर एहा अग।।

फरीद साहब कहते हैं जिन महात्माओं ने मन के साथ संघर्ष करके अपनी जिंदगी बनाई है उन्हें पता है कि दुनिया किन दुखों में पीड़ी जा रही है। मैं समझता था कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार का दुख मुझे ही लगा हुआ है। जब काम की अग्नि भड़कती है तो यह इंसान को अंधा कर देती है, जानवरों वाले काम करवा लेती है। इसी तरह जब मोह की अग्नि भड़कती है तो इंसान सारे गुरु–पीरों को छोड़कर मोह को प्राप्त करता है। मोह से बँधा हुआ इंसान ही इस संसार में आता है।

इन पाँच डाकुओं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की स्थूल गाँठ हमारी आँखों के पीछे है। सूक्ष्म त्रिकुटी में दूसरी मंजिल पर है, जब हम

तीसरी मंजिल पर जाते हैं तो आत्मा से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतार लेते हैं, वहाँ इन तीनों का नामों निशान नहीं। वहाँ जाने के लिए हमें दिन–रात संघर्ष करना पड़ता है भूख–प्यास झेलनी पड़ती है। यह बातों का मजबून नहीं करनी का मजबून है।

जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा कि इन पाँचों ने तो सारा संसार ही दुःखी कर रखा है, यही जन्म–मरण का कारण बना हुआ है। हम बातों से महात्मा बनते हैं लेकिन ये किसी महात्मा को बेइज्जत करते हुए आगे पीछे नहीं देखते। आप पुराण पढ़कर देखें! 'शब्द–नाम' की कमाई करने वाले किसी भी महात्मा की कहानी नहीं मिलेगी कि वे इस तरह फेल हुए। अब फरीद साहब कहते हैं कि मुझे ऊपर सच्चखंड में पहुँचकर पता चला कि इस घाणी में तो सब ज्ञानी–ध्यानी, पढ़े–लिखे लोग पीड़े जा रहे हैं।

फरीदा भूम रंगावली मंझ विसूला बाग।।
जो जन पीर निवाजया तिन्हां अंच न लाग।।

अब गुरु अर्जुनदेव जी महाराज फरीद साहब से कहते हैं, ''देख प्यारेया! तू दुनिया के बाग की बात करता है लेकिन मैं तुझे यह बताना चाहता हूँ कि जब हम अपनी आत्मा को तीनों पर्दों से आजाद कर लेते हैं तो यह दुनिया हमें काँटो की बजाय फूलों की तरह लगती है, **यह दुनिया रंगीला बाग है**।'' जो अपने गुरु–पीर के कहे अनुसार 'शब्द–नाम' की कमाई करते हैं वे अपनी आत्मा को दागी करके इस संसार से नहीं जाते, उन्हें आँच तक नहीं लगती। धर्मदास ने अपने गुरु कबीर साहब के आगे कसम खाकर कहा थाः

सुपने इच्छया न उठे गुरु आन तुम्हारी हो

गुरुदेव! मैं आपकी कसम खाकर कहता हूँ कि मुझे स्वपन में भी इन पाँच डाकुओं की इच्छा नहीं उठती। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैंः

निमख स्वाद कारण कोट दिनस दुख पावे
घड़ी मुहत रंग माणें रलिया बहोर बहोर पछतावे

कोई पागल ही होगा जो एक सैकिंड की विलासिता के लिए करोड़ों जन्म दुःख पाएगा। करोड़ दिन के तैंतिस हजार साल बनते हैं। महात्मा हमें प्यार से कहते हैं कि जिन्हें पूरे गुरु मिल जाते हैं वे नाम की कमाई करते हैं।

फरीदा उमर सुहावड़ी संग सुवंनड़ी देह।।
विरले केई पाईअन जिन्हां प्यारे नेंह।।

आप कहते हैं, ''ऐसे बहुत विरले हैं जिनकी देह को देखकर दुनिया तर जाती है। जिनका उस प्यारे परमात्मा गुरु के साथ प्यार लगा होता है, उनके साथ प्यार लगाकर हम भी प्यार बन जाते हैं।''

कंधी वहण न ढाह तौ भी लेखा देवणा।।
जिधर रब रजाय वहण तिदाऊ गौं करे।।

फरीद साहब होका देकर कह रहे हैं, ''आप इस ख्याल को दिल से ही निकाल दें कि हम जो कर्म कर रहे हैं उसे कोई देख नहीं रहा, परमात्मा सब कुछ देख रहा है। दरिया में जिस तरफ पानी का बहाव होता है पानी उसी तरफ चला जाता है।''

इसी तरह आपने लेखा जरूर देना है, हम बहुत से जन्मों में अच्छे कर्म करते हैं तो परमात्मा हमारी किस्मत में अपने मिलाप का अक्षर डाल देता है। बचपन से ही हमारा झुकाव सतसंग की तरफ होता है, नाम की तरफ हो जाता है और हम बुरे कर्मों की तरफ से बचना शुरु कर देते हैं। अगर हमारे पिछले जन्मों के बुरे कर्म हैं तो चाहे कोई हमें कितना भी समझा ले, हमसे प्यार–मौहब्बत कर ले फिर भी हमारे अंदर बुरे ख्याल आएंगे।

आप कहते हैं जहाँ उस मालिक की रजा है कर्मों के मुताबिक हम उस तरफ लग जाते हैं। पापों की तरफ लग गए तो बुद्धि पापों से भर जाती है। कोई हमें कितना भी समझा ले हम कहेंगे नहीं हमारे कर्मों में यही कुछ लिखा हुआ है। परमात्मा ने किसी के कर्मों में यह नहीं लिखा कि तू खोटे कर्म कर।

हमारे तीन प्रकार के कर्म हैं। संचित, प्रालब्ध और क्रियमान। संचित कर्मों का स्टॉक ब्रह्म में है। प्रालब्ध कर्म हम हर जन्म में करते हैं और अगले जन्म में भोगते हैं ये कर्म घटते या बढ़ते नहीं। क्रियमान वे कर्म हैं जिन्हें करने के लिए आज हम स्वतंत्र हैं। सन्त–महात्मा मानव जाति पर दया करने के लिए आते हैं। सन्त–महात्मा जब नाम देते हैं हम पर दया करके हमारे संचित कर्मों का स्टॉक खत्म कर देते हैं।

प्रालब्ध कर्मों का भी अंदर इस किस्म का इंतजाम करते हैं कि जब अंदर शब्द रखते हैं हम नाम की कमाई करते हैं तो आत्मा मजबूत हो जाती है और हम प्रालब्ध कर्म आसानी से भोग लेते हैं। कुछ कर्म नाम जपने से कट जाते हैं। आप क्रियमान कर्म सोचकर करें। आपने मिर्च बीजी हैं तो आप मिर्च ही काटेंगे अगर ईख बोया है तो ईख ही काटेंगे लेकिन आगे के लिए सोचकर कर्म करें क्योंकि ये कर्म आपने ही काटने हैं। जैसे हमारे कर्म हैं हमारी बुद्धि पर वैसा ही असर पड़ा हुआ है। मैले कर्म हैं तो बुद्धि मैली है अच्छे कर्म हैं तो बुद्धि अच्छी है।

फरीदा डुक्खां सेती देहों गया सूलां सेती रात।।
खड़ा पुकारे पातणी बेड़ा कप्पर वात।।

फरीद साहब कहते हैं कि बचपन से दुःख गले में पड़े, बुरी सोहबत की, डाके मारे, चोरियाँ की, कत्ल किए आखिर उन्हें भोगने के लिए थाने, तहसीलों, जेलों में जाकर जिंदगी बर्बाद हो गई। रात अपने लिए तो दुखों से भरी हुई बीतनी ही थी परिवार के लोग भी तारे गिन–गिनकर दिन चढ़ाते हैं कि कब दिन होगा। खुद तो दुःखी होना था परिवार को भी दुःखी कर दिया। जिंदगी सूलों के बिछौने की तरह हो जाती है। हमारी जिंदगी का बेड़ा परमात्मा के हाथ में है, परमात्मा इसका मल्लाह है लेकिन हमारा भूला हुआ मन फिर भी परमात्मा के ऊपर ऐतबार नहीं करता, कहता है कि मैं जो कुछ करता हूँ वह ठीक है क्योंकि अहंकारी मिथकर चलता है।

लंमी लंमी नदी वहै कंधी केरै हेत।।
बेड़े नों कप्पर क्या करे जे पातण रहै सुचेत।।

आप कहते हैं कि बहुत लम्बी नदी बह रही है, क्या चौरासी का चक्कर खत्म होने वाला है? यह बड़ा ही लम्बा है। वही समझदार बंदे हैं जो किनारे पर खड़े होकर सोचते हैं कि मल्लाह, समुंद्र के ववंडरों से वाकिफ है। मल्लाह बेड़ा लेकर आया है, मैं इसके बेड़े में सवार होकर चला जाऊँ।

महात्मा हमेशा ही संसार में 'शब्द–नाम' का बेड़ा लेकर आते हैं। ऐसा नहीं कि वे आज ही बेड़ा लेकर आए हैं पहले नहीं आए या आगे नहीं आएंगे। महात्मा कहते हैं कि भ्रावों! चौरासी से बचने के लिए आप इस नाम के बेड़े में चढ़ जाएं। कबीर साहब कहते हैंः

जम का दंड मूंड मे लागे कहे कबीर तब ही नर जागे

हम उस समय जागते हैं जब दुःख–कलेश आकर घेर लेते हैं फिर हम कहते हैं कि इसे सुखमनी साहब सुनाएं। हिन्दू कहते हैं इसे गीता सुनाएं या हाथ पर दीपक जलाकर दिखाते हैं कि इस लाईट पर ध्यान लगाएं। आप देखें! कोई आदमी मरते समय यह कहे कि मुझे प्यास लगी है अगर उस समय कुआँ खोदें तो वह किस तरह कामयाब हो सकता है? अगर हमने मीठा पानी पीना है गिलास में पानी डालकर मीठा मीठा करें तो कभी भी पानी मीठा नहीं हो सकता, मीठे का इंतजाम भी पहले करना पड़ता है।

महात्मा कहते हैं अगर आपने ज्योत में ख्याल ले जाना है तो आप जीते जी ज्योत को जगाएं। परमात्मा ज्योत रूप, नाद रूप होकर सबके अंदर विराजमान है लेकिन हम सोचते हैं बाहर रूई की बत्ती बनाकर उसकी ज्योत जगाएं, उसमें ध्यान टिकाने से हम मुक्त हो जाएंगे। कबीर साहब कहते हैंः

दीवा बले अगम का बिन बत्ती बिन तेल

वह अगम का दीपक सबके अंदर बिना बत्ती और तेल के जल रहा है।

राम नाम है जोत सवाई तत्त गुरुमत काढ लईजे

राम नाम की ज्योत सबके अंदर जल रही है। गुरुमुख महात्मा अंदर उस ज्योत के दर्शन करते हैं और हमें भी ज्योत का अनुभव करवाते हैं। महात्मा हमें अंधविश्वास नहीं देते, महात्मा कहते हैं, ''आओ करो और देखो।''

फरीदा गल्ली सो सज्जण वीह इक ढूंढेदी न लहां।।
धुक्खां ज्यों मांलीह कारण तिन्हां मा पिरी।।

सन्त–महात्माओं ने बहुत खोज की होती है, फरीद साहब ने काफी खोज की। आप गुरु नानकदेव जी, बाबा सावन सिंह जी की हिस्ट्री पढ़कर देखें। बाबा जयमल सिंह जी ने पूर्व से लेकर पश्चिम तक हर जगह खोज की कि हमें कोई 'पाँच–शब्द' देने वाला मिल जाए, आखिर आप कामयाब हुए।

मैं अपने मुत्तलिक बताया करता हूँ कि ऐसा कोई समाज या धर्मस्थान नहीं जहाँ मैं श्रद्धा प्यार से नहीं गया। बचपन से मेरा दिल–दिमाग खुल्ला था। मैं मस्जिद में भी उसी तरह जाता था जिस तरह मुझे मंदिर से प्यार था। जिस तरह मुझे मंदिर से प्यार था उसी तरह मुझे गुरुद्वारे और चर्च के साथ भी प्यार था। मुझे बचपन से ही पता था कि वह परमात्मा हर जगह है। मैंने किसी के साथ घृणा नहीं की लेकिन सच्चाई को ढूंढने के लिए बंदे को हर जगह जाना पड़ता है।

इसी तरह फरीद साहब हर जगह गए। आप कहते हैं अफसोस! बातें करने वाले तो बहुत लोग मिल जाते हैं लेकिन जिसे मैं ढूंढता हूँ वैसा मुझे एक भी नहीं मिला, जो अंदर का भेदी हो। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

गल्ली किन्हें न पाया

बातों से किसी ने परमात्मा को नहीं पाया और न कोई पा ही सकता है। आप महात्माओं की हिस्ट्री पढ़ें। गुरु नानकदेव जी ने ग्यारह साल ईंट–

पत्थरों का बिछौना किया, क्या आप अच्छे बिस्तरों पर नहीं सो सकते थे? अक्क–रेत का आहार किया, क्या आप अच्छे खाने नहीं खा सकते थे? यह कुर्बानी का मजबून है।

फरीदा एह तन भैकणा नित नित दुखीऐ कौण।।
कंनीं बुजे दे रहां कित्ती वगै पौण।।

जिसने 'शब्द–नाम' की कमाई करनी है उसे अवश्य ही कई बातों का पालन करना पड़ता है। कई बातों की कुर्बानी करनी पड़ती है, अपनी मान–पदवी का ख्याल छोड़ना पड़ता है। लोगों के ताने–मेहणें सहने के लिए दिल को मजबूत बनाना पड़ता है। सुख को छोड़कर दुखों को आवाज लगानी पड़ती है। इसलिए आप प्यार से कहते हैं कि जब हम मश्क पूरी कर लेते हैं तो परमात्मा हमें दुनिया में भी मान देता है। सुख की दवाई दुख है। सोना खान में से खोदकर निकाला जाता है। मोती प्राप्त करने के लिए समुंद्र के गहरे पानी में डुबकी लगानी पड़ती है।

इसी तरह जिस सुख का अंत दुख है, उसे सुख नहीं कह सकते। दुनिया के पदार्थों में सिवाय दुख के आज तक किसी ने कुछ भी प्राप्त नहीं किया। किसी ने फरीद साहब को ताना मारा, ''फकीरा! तेरा तन सूख गया है, तूने अच्छा खाकर नहीं देखा। आप फकीर लोग शादी नहीं करवाते और शादी हुई को छोड़कर चले जाते हो? आप लोगों की कोई इज्जत–मान नहीं।'' फरीद साहब ने हँसकर कहा, ''यह तन तो रोज ही भौंकता है कि तू मुझे काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की लज्जतें दे लेकिन मैं इनके पीछे लगकर कुत्ता नहीं बनता, ये अपने आप ही भौंक–भौंककर हट जाते हैं।''

मुझे बाबा बिशनदास से 'दो–शब्द' का भेद मिला, आपने जिंदगी में बहुत समय नमक और मीठा नहीं खाया था अगर आपसे खाने के लिए पूछते

तो कहते कि कुत्ता बाँधा हुआ है। फरीद साहब कहते हैं, ''मैंने कान में बुज्जे दिए हुए हैं मैं काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की बात नहीं सुनता।

फरीदा रब खजूरी पक्कीआं माखिअ नई वहंन।।
जो जो वंजै डीहड़ा सो उमर हत्थ पवंन।।

किसी ने फरीद साहब से कहा कि तू यहाँ भूखा क्यों बैठा है? मैं अरब जा रहा हूँ वहाँ की खजूरें बहुत मीठी हैं चल तुझे वहाँ की खजूरें खिला लाएं। अरब, मौहम्मद साहब का जन्म स्थान है। मुसलमान जाति में जो आदमी वहाँ की परिक्रमा कर आए उसका जन्म सफल समझा जाता है लेकिन मुसलमानों में ऐसे कई कमाई वाले फकीर हुए हैं जो इस बात को नहीं मानते, वे कहते हैं कि खुदा अंदर है बाहर से किसी को नहीं मिलता।

फरीद साहब कहते हैं अगर आप अंदर जाएं अंदर रंगीले बाग हैं, मीठे फल लगे हुए हैं और अंदर की खजूरें बहुत ही मीठी हैं। सारे सन्त इस बात का इकबाल करते हैं कि आपके अंदर ही माली है, बूटे हैं और बूटे लगाने वाला भी है। आप जो चीजें बाहर देखते हैं वे परमात्मा ने आपके जिस्म के अंदर भी रखी हुई हैं।

जो ब्रह्मंडे सोई पिंडे जो खोजे सो पावे
पीपा परम व परम तत्त है सतगुरु होय लखावे

हमें कोई ऐसा महात्मा मिले जो अंदर जाता हो और हमें भी अंदर ले जाए। फरीद साहब कहते हैंः

फकीरा फकीरी दूर है जैसे पेड़ खजूर
चढ़ गया तो अमर फल गिर गया तो चकनाचूर

जिस तरह खजूर का फल ऊपर लगता है। भ्रावा! उसी तरह उम्र काफी होती है और इसमें बहुत उतार–चढ़ाव आते हैं अगर तू अंदर जाए तो अंदर उस नाम अमृत को प्राप्त कर सकता है।

फरीदा तन सुक्का पिंजर थीआ तलीआं खूंडह् काग।।
अजै सो रब न बाहुड़यो देख बंदे के भाग।।

आप प्यार से कहते हैं कि तन सूखकर पिंजर हो गया है पसलियाँ अलग–अलग दिखती हैं। फरीद साहब काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार को कौआ कहकर बयान करते हैं कि ये अभी भी ठूंगे मारते हैं कि तू हमें भी खुराक दे। हमारी यह हालत है कि बूढ़े हो जाते हैं फिर भी हमारा मन इस तरफ से नहीं मानता। हम सोचते हैं कि हमें कौन देख रहा है लेकिन आप अपने दिल में झाँककर देखें कि हम बुजुर्ग होकर क्या करते हैं? महात्मा फरीद साहब हमें बाणी में कहते हैंः

पंजे विषय भगेंदया उम्र गँवाई यार
ऐह मन न रजया ते हुण कद रजसी यार

तन सूखकर पिंजर हो गया बीमारी ने शरीर का सब कुछ खत्म कर दिया लेकिन मन अभी भी भोगों से पीछे नहीं हटा। भृतहरि अपना घर, औरतें, महल सब छोड़कर चले जा रहे थे। रास्ते में किसी का थूक पड़ा था, वह धूप में चमक रहा था। दिल में ख्याल आया कि लाल पड़ा है, उस पर हाथ मारा तो हाथ पीक से भर गया। भृतहरि ने मन को लाख लानतें मारीः

सुंदर मंदर नारी छड्डी अर सखियन के साथ
रे मन धोखे लाल के ते भरया पीक से हाथ

भृतहरि जी चले जा रहे थे, एक कुत्ते के सिर में कीड़े पड़े हुए थे उसका सारा शरीर उजड़ा हुआ था उसमें से पीक बह रही थी। ऐसे कुत्तों को खाने के लिए कोई कुछ नहीं डालता, वह कुत्ता भूखा था उससे बिल्कुल उठा नहीं जा रहा था। पास में कुत्तियाँ थी वह उसे चाटने लगा कि मैं इसके साथ भोग करूं। फरीद साहब कहते हैं कि बूढ़े की ऐसी हालत हो जाती है मन फिर भी दुनिया के विषय–विकारों से नहीं हटता।

कागा करंग ढंढोलया सगला खाया मास।।
ए दोय नैनां मत छुहयो पिर देखन की आस।।

फरीद साहब कहते हैं, ''इन पाँच कौओ ने शरीर का माँस खत्म कर दिया है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

भोगो रोग सो अंत विगूवे, आय जाए दुख पाएंदा

भोग से रोग और रोग से बीमारियाँ होती हैं फिर हम जगह–जगह जाकर इलाज करवाते हैं, डाक्टर के आगे हाथ जोड़ते हैं कि हमारा इलाज करें। आप अपना इलाज खुद कर सकते हैं। इसके खोटे भाग्य देखें कि यह रब की तरफ नहीं चलता, बुराईयों की तरफ से तौबा नहीं करता।

फरीद साहब फरियाद करते हुए कहते हैं, ''हे कौओ! तुम मेरा माँस न खाओ मेरे जिस्म के अंदर परमात्मा बसता है। मैं भक्ति में लग गया हूँ नाम की कमाई में लग गया हूँ। अब यहाँ तुम्हारा ठिकाना नहीं, तुम उनके पास जाओ जो तुम्हें जगह देते हैं।''

कागा चूंड न पिंजरा बसै त उडर जाहि।।
जित पिंजरै मेरा सौह वसै मास न तिदू खाहि।।

फरीद साहब कहते हैं, ''कौओ! मेरे शरीर के अंदर परमात्मा बसता है मैंने तो अपने शरीर को भक्ति, नाम की कमाई करके सुखा लिया है। अब तुम परमात्मा के पिंजर को खाने के हकदार नहीं क्योंकि मैंने तुमसे कोई भी काम नहीं लिया। मैं जैसा आया वैसा फिर रहा हूँ, परमात्मा मेरे अंदर है तुम कोई और ठिकाना ढूंढो।''

फरीदा गोर निमाणी सड करे निघरया घर आओ।।
सरपर मैथे आवणा मरणों ना डरिआहो।।

फरीद साहब कहते हैं कि जब बुढ़ापा आ जाता है कब्र आवाजें मारती है कि मौत सिरहाने आ गई है। बच्चों से कहते हैं कि डाक्टर से कोई ऐसा यंत्र लगवाओ कि मेरी उम्र बढ़ जाए। पत्नी को आवाजें मारता है, बेटों को आवाजें मारता है लेकिन महात्मा कहते हैं कि अब क्या बनता है?

मैं बताया करता हूँ कि मेरे दोस्त ने एक दिन अदरक पी ली। अदरक की गर्मी से परेशान हुआ तो उसने गुरमेल को आवाज लगाई कि बेटों को बुलाओ। उस समय मैं बम्बई गया हुआ था, जब मैं वापिस आया मुझे पता लगा तो मैंने उससे कहा, ''अगर मर जाता तो क्या बेटे आकर छुड़ा लेते?'' महात्मा हमें प्यार से कहते हैं देखो भई प्यारेयो! कब्र आवाजें मारती है, बुढ़ापा मौत को आवाजें मारता है। कब्र कहती है आखिर तेरा ठिकाना मेरे अंदर ही है, तू मरने से क्यों डरता है?

एनीं लोयणीं देखदयां केती चल गई।।
फरीदा लोकां आपो आपणी मैं आपणी पई।।

फरीद साहब कहते हैं कि हम अपने साथियों और परिवार वालों को अपना साथ छोड़ते हुए देखते हैं। हम उन्हें अपने कंधों पर उठाकर अपने–अपने रीति–रिवाज के मुताबिक जलाते हैं या मिट्टी के सुपुर्द कर देते हैं। कई ऐसे भी हैं जो मुर्दे को उसी तरह रख लेते हैं उस मुर्दे को कौवे और कुत्ते खा जाते हैं। हम सोचते हैं कि मौत तो इसके लिए थी हमारे लिए तो दुनिया की ऐशों–ईशरतें और शराब–कबाब ही हैं।

इन आँखों के देखते–देखते बड़े लोग जा चुके हैं। दुनिया में हर किसी को अपनी पड़ी हुई है। कोई कहता है कि मैं अपने लड़के की शादी कर दूँ। कोई कहता है कि मैं धन को कहाँ रखूँ। कोई कहता है कि मुझे किसी तरीके से मान–बड़ाई मिले। कोई दिन–रात पढ़ रहा है कि मैं अच्छा मुलाजिम बन सकूँ। सारी दुनिया इसी धंधे में लगी हुई है। हम अपने–अपने कारोबार को

प्राप्त करना चाहते हैं लेकिन मुझे अपनी पड़ी हुई है। मैं यह कहता हूँ कि मुझे इस जामें में परमात्मा मिल जाए तो मेरा मनुष्य जामें में आना सफल हो जाएगा नहीं तो जिस तरह कुत्ते–बिल्ले पेट भरकर चले जाते हैं, पक्षी पेड़ों पर बैठकर चले जाते हैं ऐसे ही मेरा जामा निष्फल चला जाएगा।

आप सँवारह् मैं मिलह् मैं मिलयां सुख होय।।
फरीदा जे तू मेरा होय रहैं सभ जग तेरा होय।।

मेरे गुरुदेव हमेशा कहा करते थे, ''भगवान इंसान की तलाश में है, भगवान की सदा ही कोशिश रहती है कि मुझे कोई इंसान मिले लेकिन इंसान बनना मुश्किल है।'' इसलिए भगवान कहता है, ''फरीदा! जो कोई अपने आपको सँवार लेता है, समझ लेता है मैं उसी का हो जाता हूँ, वहाँ जाकर डेरा लगा लेता हूँ। जो मुझे अपना बना लेते हैं वक्त आने पर सारा संसार उनका बन जाता है।''

त्रेता युग में श्री रामचन्द्र जी महाराज हुए, हम उन्हें प्यार से याद करते हैं। कबीर साहब को संसार में आए हुए काफी अरसा हो गया है सिर्फ हमारा ही मुल्क नहीं बल्कि इस संसार का कोना–कोना समुंद्र, पहाड़ों की चोटियाँ सब जगह उनको याद किया जाता है। इसी तरह गुरु नानकदेव जी महाराज ने लोगों के दिलों पर राज किया। लोग सुबह उठकर प्यार से पहले गुरु नानकदेव जी का नाम जपते हैं क्योंकि उन्होंने भगवान को अपने अंदर जगह दी, अपने आपको सँवारा। आप जहाँ भी बैठे आपने लोगों का सुधार किया।

सतसंगी पर बहुत भारी जिम्मेदारी होती है वह आप सुधरा होता है और उसका धर्म बनता है कि वह दूसरे लोगों का भी सुधार करे। दूसरे लोगों से कहे कि इस तरह चलने से मेरा फायदा हुआ है आप भी इस तरह चलें। सतसंगी में से नाम की खुशबू निकले, पता लगे कि यह कहाँ जाता है। अगर तू मेरा हो जाए तो सारा संसार ही तेरा हो सकता है।

कंधी उत्ते रूखड़ा किचरक बंनै धीर।।
फरीदा कच्चै भांडै रखीऐ किचर ताईं नीर।।

अब फरीद साहब कहते हैं, ''दरिया के किनारे पानी रूका हुआ है, वह पानी कितनी देर ठहर सकता है उसकी क्या मुनियाद है? जब ऊपर से पानी का जोर पड़ेगा तो फौरन उसकी जड़ों से मिट्टी निकल जाएगी और पानी आगे की तरफ बह जाएगा।'' इसी तरह यह देह भी कच्चे बर्तन की तरह है, यह देह काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार में फँसी हुई है, इसमें नौं सुराख लगे हुए हैं। हम इसकी क्या आशा लगाकर बैठे हैं, आप कच्चे बर्तन में कितनी देर पानी रख लेंगे? अगर हमने इस देह में बैठकर नाम जप लिया तो फायदा है, यह देह यहीं पर छोड़ जानी है।

फरीदा महल निसक्खण रह गए वासा आया तल।।
गोरां से निमाणीआं बहसन रूहां मल।।

आमतौर पर हम जब बाहर जाते हैं तो राजा–महाराजाओं की यादगारें देखते हैं कि किस तरह किले की सिर्फ नींव ही रह गई है। वक्त की सरकार ने उस किले के निशान संभालकर रखे हुए हैं। सरकार पैसा खर्च करती है। हर आदमी की देखने की अपनी दृष्टि होती है कि हम किस भाव से देखते हैं।

सन् 1947 में जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ उस समय मैं दिल्ली गया हमारी आर्मी ने पहली सलामी दी थी। हमें लाल किला दिखाने वाले आदमी ने सारी हिस्ट्री बताई कि यह दिवान–ए–आम है, यह दिवान–ए–खास है, यह नहर–ए–बहिश्त है, यहाँ तख्त–ए–तोश होता था। शाहजहाँ यहाँ बैठकर नाच–रंग देखता था। उस जमाने में एक नाली से गर्म पानी और दूसरी नाली से ठंडा पानी आता था।

आखिर में उसने बताया कि शाहजहाँ के लड़के औरंगजेब ने ही उसे कैद कर लिया, उसकी मौत आगरा के किले में हुई। सारी दुनिया ही यह देखकर

और सुनकर आती है लेकिन अपनी–अपनी दृष्टि होती है, हर इंसान की अलग–अलग सोचनी होती है। यह सब सुनकर मुझे बुखार हो गया कि शाहजहाँ का कैसा कर्म होगा? शाहजहाँ ने अपने लड़के के लिए कितना पैसा खर्च किया होगा, कितनी खुशी मनाई होगी, उसे पाला–पोसा लेकिन उसे पता नहीं था कि इसी लड़के ने मुझे कैद कर लेना है।

शाहजहाँ की हिस्ट्री में आता है कि उसने अपने बेटे को पत्र लिखा, ''बेटा! तू हिन्दुओं को देखकर खुश नहीं होता उन्हें बुरा समझता है लेकिन वे अपने मरे हुए माता–पिता को भी अन्न–पानी पहुँचाने की कोशिश करते हैं, उनके नाम पर दान–पुण्य करते हैं। तेरा पिता जीवित है, मेरे ऊपर जो पहरेदार हैं तू उनसे कह दे कि वे मुझे पेट भरकर पानी पिला दिया करें।''

औरंगजेब ने उसी समय दो अक्षरों में अपने पिता को उस पत्र का जवाब दिया कि तूने जिस स्याही से यह पत्र लिखा है जब तुझे प्यास लगे तो इस स्याही को चूस लिया कर। आप देखें! एक बादशाह पानी के लिए भी दुखी हुआ। आज वे महल सूने पड़े हैं, वहाँ कबूतर बोलते हैं, कोई झाड़ू निकालने वाला भी नहीं है।

उन्हीं दिनों दिल्ली में औरंगजेब के हुक्म से गुरु तेगबहादुर साहब का कत्ल किया गया। औरंगजेब ने अपनी सच्चाई का होका दिया कि हम लोग सच्चे हैं, यह महात्मा ठीक नहीं लोगों को गुमराह करता है। जिस जगह गुरु तेगबहादुर जी को कत्ल किया गया था आज उस जगह लोग जूते पहनकर नहीं जाते और सारा दिन प्रशाद बाँटते हैं। वक्त पाकर उस फकीर की इज्जत हो रही है लोग मान–तान कर रहे हैं अगर औरंगजेब को पता होता कि लोग मुझे बुरा कहेंगे तो वह गुरु तेगबहादुर साहब का कत्ल न करता।

आखीं सेखा बंदगी चलण अज्ज कि कल।।
फरीदा मौते दा बंना एवैं दिसै ज्यों दरीआवै ढाहा।।
अग्गै दोजक तपया सुणीऐ हूल पवै काहाहा।।

फरीद साहब कहते हैं, ''मौत इस तरह जबरदस्त आती है जैसे पानी के जोर से दरिया का बाँध टूट जाता है। आगे यम जीवों को तपते हुए कड़ाहे में तल रहे हैं। यम यही कहते हैं कि इसे मारो–पीटो, तेल के अंदर तल दो, इसने वहाँ अत्याचार किए थे।''

इकना नों सभ सोझी आई इक फिरदे बेपरवाहा।।

जिन्हें समझ आ गई वे नाम जपने लगे, सतसंग पर अमल करने लगे कि महात्मा ने जो कहा है उसे पल्ले बाँध लिया। जिन्हें समझ नहीं आई वे बेपरवाह फिरते हैं और कहते हैं, ''हाँ! देखेंगे किसने लेखा माँगना है?''

ऐह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा

प्यारेयो! कह लेना तो आसान है लेकिन ऐसे ख्याल गलत रास्ते पर ले जाने वाले हैं। आप इस दुनिया में भी देख लें! सारे परिवार या गाँव के लोगों के एक जैसे कर्म नहीं होते। कोई सुखी है कोई दुखी है, कोई घर के अंदर बीमारी का हिसाब दे रहा है तो कोई बेरोजगारी का हिसाब दे रहा है। जब हम यहाँ भी सबको एक जैसा नहीं देखते तो आप ऐसा न सोचें कि मालिक के दरबार में कोई हिसाब पूछने वाला नहीं। पापी आत्माओं को वहाँ भी जगह नहीं मिलती। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

नानक जीव उपाएके लिख नावे धर्म बहाल्या
उत्थे सच्चो ही सच निबड़े सुण बख्त अग्गे जजमाल्या
थाव न पाए कूड़ यार मुँह काले दोजक चालया

अमल जे कीतया दुनी विच से दरगह ओगाहा।

धर्मराज को किसी की गवाही की जरूरत नहीं। वहाँ तेरे अच्छे या बुरे कर्म ही गवाही देंगे।

फरीदा दरीआवै कंनै बगुला बैठा केल करे।।
केल करेंगे हंझ नो अचिंते बाज पए।।

बाज पए तिस रब दे केलां विसरीआं।।
जो मन चित न चेते सन सो गालीं रब कीआं।।

फरीद साहब हमें बाहरी मिसाल देकर समझा रहे हैं कि दरिआ के किनारे बगुला बैठा है, देखने में बगुला बहुत सुंदर होता है। बगुले ने एक टाँग पर खड़े होकर ध्यान लगाया होता है लेकिन उसका ध्यान परमात्मा की तरफ नहीं मछली की तरफ होता है। जब मछली थोड़ी सी बाहर निकलती है तो वह उसे काटकर ऊपर की तरफ उछाल देता है बगुला खुशियाँ मना रहा होता है ऐसे ही खुशियाँ मनाते हुए उसके पीछे बाज पड़ जाता है क्योंकि बाज भी परमात्मा के हुक्म से पैदा होता है और उसका खाज भी जानवर होते हैं। जब बाज बगुले को खाने लगता है तो बगुला अपना खेल भूल जाता है।

यह दुनिया रंगीला बाग है, हम भी दुनिया के रंगीले बाग में ऐशो–इशरत, शराबों–कबाबों के खेल कर रहे हैं। हम कहते हैं कि ये बकरियाँ, भेड़े, गाय हमारी खुराक के लिए ही पैदा की गई हैं। हम कत्ल करके उनके माँस को मसाले लगाकर खा रहे हैं अगर कोई हमसे जोरावर हमें मारकर तलकर खाए और कहे कि तुम हमारे लिए ही पैदा किए गए हो तो क्या हम सुख महसूस करेंगे?

अगर हमारे बच्चे को हमारे सामने काटा जाए तो क्या हमारी आँखों में से पानी नहीं निकलेगा? जरूर निकलेगा और हम फरियाद भी करेंगे। जिन गायों के आगे से उनके बछड़े को पकड़कर ले जाते हैं तो गाय की आँखों में से पानी निकलता है लेकिन कौन उसकी फरियाद सुने? दुनिया में कोई अदालत है जिसमें जाकर वह दरख्वास्त दे।

शिकारी हिरण को तीर मारता है तो हिरन जख्मी हो जाता है। कोई उसकी मलहम पट्टी करता है वह छिपकर अपनी जान बचाता है हम फिर उसे पकड़ लेते हैं। हो सकता है किसी समय वह हमसे भी अच्छा इंसान हो,

सेठ–साहूकार हो। मनुष्य जामें में गलतियाँ की, आज निचले जामों में आकर हिसाब–किताब दे रहा है। अगर हम गलतियाँ करते हैं तो क्या हम उसकी जगह पर आकर जन्म नहीं लेंगे? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

लिए दिए बिन रहे न कोय

शेर बकरी को खा रहा था। बकरी हँसने लगी तो शेर ने कहा, ''तू हँस क्यों रही है, तुझे दर्द महसूस नहीं हो रहा?'' बकरी ने कहा, ''दर्द तो होता है जान सबको प्यारी है लेकिन मैं इसलिए हँस रही हूँ कि हम घास–पत्ते खाने वाले जीव हैं हमारी उल्टी करके चमड़ी उतारी जाती है लेकिन जो हमें खाएंगे उनकी क्या हालत होगी? अगर कोई हमारी पुकार सुने तो हमारे बच्चों को नपुंसक कर दे ताकि हमारी औलाद ये दुःख सहन न करे। कबीर साहब जी कहते हैंः

बकरी पाती खात है ताकि काडी खाल
जो बकरी को खात है तिनके कौन हवाल

आज हम जिनका माँस तल कर खा रहे हैं वे भी हमारा माँस तलेंगे। परमात्मा ने किसी को भी ऐसी छूट नहीं दी कि तू हर जन्म में लोगों के माँस को मसाला लगाकर स्वाद ले और तुझसे कोई न पूछे? जिस तरह दरिआ के किनारे बगुला खेल कर रहा था, बाज ने उसे सारा खेल भुला दिया उसी तरह जब हम ऐसी ऐशो–इशरत करते हैं तो हमारे पीछे भी बाज पड़ जाता है। हम जो खेल करते हैं वह सारा ही भूल जाते हैं।

मैंने अनेकों आदमी देखे हैं जब मौत का फरिश्ता आता है तो वे काँपते हैं, वे कहते हैं कि मैंने बहुत पाप किए हैं हमें परमात्मा ने कब बख्शना है? जो किसी का माँस खाता है शराब पीता है, किसी का कत्ल करता है क्या कभी सोचता है कि मेरे लिए भी मौत है? जिन सन्त–महात्माओं की आँखे खुली हैं वे कहते हैं, ''जितना इंसान को जीने का हक है उतना ही पशु–

पक्षी को भी जीने का हक है। आप जैसा बर्ताव अपने लिए चाहते हैं वैसा ही बर्ताव अपने पड़ोसी के साथ करें।''

साढ़े त्रे मण देहुरी चलै पाणी अंन।।
आयो बंदा दुनी विच वत आसूणी बंन।।

फरीद साहब कहते हैं कि हर बंदे की देह साढ़े तीन हाथ की होती है। आज के युग में देह पानी और अन्न के सहारे चल रही है। बहुत गिनती की पूँजी मिली है, आमतौर पर आयु सौ साल की है लेकिन बहुत कम गिनती के लोग ही सौ साल तक की आयु पूरी करते हैं बाकी साठ–सत्तर साल या इससे छोटी उम्र में ही संसारिक यात्रा पूरी करके चले जाते हैं।

मलकल मौत जां आवसी सभ दरवाजे भंन।।
तिन्हां प्यारयां भाईआं अग्गै दित्ता बंन।।
वेखो बंदा चलया चहुं जणयां दै कंन।।

फरीद साहब कहते हैं, ''प्यारेया! जब मौत आती है तो परिवार के लोग घर में हाजिर होते हैं लेकिन कोई यह नहीं सोचता कि इसके साथ क्या हुआ है, इसका क्या उपाय हो सकता है? परिवार के लोग उसे फट्टे पर रखकर रस्सी के साथ बाँध देते हैं।''

मैंने अपनी जिंदगी में यहाँ तक देखा है कि एक बूढ़ी औरत गुजर गई। सबने कहा कि पोतो से कहो कि वे इस बूढ़ी औरत के पैरों को हाथ लगा ले। उसकी बहू ने अपने लड़के की बाँह पकड़ ली कि इसे तो तावीज करवाया हुआ है। हम आखिरी वक्त में पैरों को हाथ लगाने से भी डरते हैं।

फरीद साहब कहते हैं कि हम जिस कुल–कुटुम्ब का इतना मान करते थे, सबने पकड़कर फट्टे पर रस्सी से बाँध दिया। चार जने उसे उठाकर चल पड़ते हैं। हमने देह में बैठकर जो अच्छे–बुरे कर्म किए होते हैं आगे जाकर वही हमारे काम आते हैं बाकी जो हमने कुल–कुटुम्ब बनाया होता है वह न

हमारी मदद करता है न हमें बचा ही सकता है। घर वाले पास ही बैठे होते हैं लेकिन किसी को यह नहीं पता कि मौत का फरिश्ता आया कहाँ से और कान से पकड़कर ले कहाँ गया, वे हमारी क्या मदद कर सकते हैं?

कबीर साहब कहते हैं कि दमामें बज रहे हैं पास ही संतरी खड़े हैं राईफलें ले रखी है लेकिन वह मौत का देवता अंदर आकर जान को अपने कब्जे में करके ले जाता है। बादशाह के आस-पास पहरेदार खड़े ही रह जाते हैं। बंदा वहाँ खुद नहीं जा सकता उसे चार आदमी उठाकर ले जाते हैं।

फरीदा अमल जे कीते दुनी विच दरगह आए कंम।।
फरीदा हौं बलिहारी तिन पंखीआं जंगल जिन्हां वास।।
कंक्कर चुगन थल वसन रब न छोडन पास।।

मैं उन पक्षियों पर बलिहार जाता हूँ जो कंकर-पत्थर चुगकर भी परमात्मा को याद करते हैं। मैं उन महात्माओं पर बलिहार जाता हूँ जो इस संसार में आकर फल-फूल खाकर अपनी गुजर करते हैं। महात्मा कभी भी खाने के स्वादों में नहीं फँसते।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी की जिंदगी का इतिहास है कि उनका रसोईया बंता सिंह था। एक बार महाराज जी को जुकाम था तो उसने बुरा-चीनी मिलाकर देने की बजाय गलती से नमक डाल दिया। महाराज जी ने कोई शिकायत नहीं की। जब उसने खाकर देखा तो भागकर आया कि महाराज जी मैंने गलती से बूरा-चीनी की बजाय नमक डाल दिया। महाराज जी ने हँसकर कहा, ''सन्त कभी भी खाने का स्वाद नहीं लेते, वे खाते समय अपनी सुरत को अंदर ले जाते हैं। खाने के स्वाद का पता तो तब लगता है जब उसे जुबान पर रखकर खाएं।''

फरीदा रुत फिरी वण कंबया पत झड़े झड़ पाहिं।।
चारे कुंडां ढूंढीआं रहण किथाऊ नाहिं।।

जब ऋतु बदल जाती है वन काँप जाता है पुराने पत्ते झड़ जाते हैं। बसंत ऋतु चली जाती है शरद ऋतु आ जाती है, झड़े हुए पत्ते फिर डाली के साथ नहीं लगते।

हमारी भी यही हालत है, बुढ़ापा आ जाता है शरीर के अंग जवाब दे जाते हैं। आज तो जवानों के भी सिर और हाथ हिलते हैं। बूढ़ों का तो आपको पता ही है कि सिर बस के स्टेरिंग की तरह हिलता है। हाथ हिलते हैं सिर हिलता है सही ठिकाने से कुछ नहीं होता। मुँह में रोटी का निवाला डालता है तो इधर–उधर निकल जाता है, घरवाले खिलाते हैं अब किस चीज का मान करें? पता नहीं प्यारेयो! किसके साथ क्या होना है? अच्छे से अच्छे डॉक्टर के पास जाता है कि मुझे रखो किसी न किसी तरह मेरी कँपकँपी हट जाए, अब वह कैसे हट सकती है? पेड़ के पत्ते वाली कहानी है कभी कहीं फिरता है कभी कहीं फिरता है।

फरीदा पाड़ पटोला धज करी कंबलड़ी पहरेओ।।
जिन्हीं वेसीं सौह मिलै सेई वेस करेओ।।

जिस वक्त फरीद साहब हुए हैं उस समय फकीरों का पहनावा कंबली होती थी अगर किसी के ऊपर काली कबंली होती तो कहते कि यह फकीर है। शुरु–शुरु में फरीद साहब ने फकीरों वाला पहनावा पहना। आप बाहर जितने मर्जी पहनावे पहन लें बाहर के पहनावे से हमारा मन बस में नहीं आता। कई सालों के बाद आपने कहा कि मैं कंबली को फाड़कर इसकी झंडी बना लूं। वह वेश करूं, वह भक्ति करूं जिससे मुझे परमात्मा मिले।

काय पटोला पाड़ती कंबलड़ी पहरेय।।
नानक घर ही बैठयां सौह मिलै जे नीअत रास करेय।।

सन्त–महात्मा जब भी संसार में आते हैं वे हमें यह उपदेश नहीं देते कि सफेद कपड़ो की जगह भगवे कपड़े पहनने से परमात्मा मिल जाएगा या

भगवे कपड़े उतारकर काले कपड़े पहनने से परमात्मा मिल जाएगा। अगर इस तरह परमात्मा मिलता हो तो यह बहुत ही सस्ता सौदा है। महात्मा कहते हैं कि अपनी–अपनी कौमो में रहें, अपनी गृहस्थी में रहते हुए आपको जो जिम्मेदारियाँ मिली हैं उन्हें पूरा करते हुए 'शब्द–नाम' की कमाई करें।

हमारे अंदर हमारा जानी–दुश्मन मन बैठा है, यह हमें काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार की लहरों में फँसाता है कभी कहता है कि घर–बार छोड़कर साधू–फकीर बना जाए। जब साधू–फकीर बन जाते हैं तो मन कहता है कि घर चलें यहाँ क्या पड़ा है, घर में ही भक्ति कर लेंगे लेकिन यह मन हमें न घर का छोड़ता है न घाट का छोड़ता है। कंबली फाड़ने की और घर–बार छोड़ने की क्या जरूरत है अगर आप 'शब्द–नाम' की कमाई करेंगे तो घर बैठे ही परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं।

आप गुरु गोबिंद सिंह जी का इतिहास पढ़कर देख लें! आज से तीन सौ साल पहले योगी और भगवे कपड़े पहनने वालों का बहुत जोर था। आज से चालीस–पचास साल पहले भी उन लोगों की काफी भरमार थी। आमतौर पर हम लोग सोचते हैं कि भगवे कपड़े पहनने से ही परमात्मा मिल जाता है।

गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज 'शब्द–नाम' की कमाई करते थे, आप बाहर के किसी भेष को मान्यता नहीं देते थे लेकिन सिक्खों के मन में यह बात बैठ गई कि भेष बदलने से ही परमात्मा मिल सकता है। आपने एक गधे के ऊपर शेर की खाल डालकर उस गधे को बाहर छोड़ दिया। सुबह जो भी किले से बाहर निकले वह अपना लोटा फैंककर वापिस आ जाए कि महाराज जी बाहर शेर घूम रहा है।

गुरु साहब ने कहा अच्छा भई! कोई इंतजाम करते हैं। गुरु साहब ने देखा कि वाक्य ही अब लोगों का दिमाग ये काम करने लगा है कि वह शेर है। आपने अपने साथ कुछ योद्धा लिए और किले का दरवाजा खुला छोड़ दिया, दूसरी तरफ थोड़ी आवाज की वह गधा भागकर किले में आ गया। आगे उस

गधे का भाईचारा ईंटे ढो रहा था, उन गधों को देखकर वह गधा ऊँची सुर में बोला। कुम्हार ने देखा कि यह तो मेरा गधा है लोग इससे ऐसे ही डर रहे हैं, कुम्हार ने उसके ऊपर पड़ी हुई शेर की खाल उतार दी और उसके ऊपर ईंटे रख दी। जो लोग रोज ही गुरु साहब के पास आकर बातें करते थे कि महाराज जी शेर हमें खाने के लिए आया है वे सारे लोग शर्मिन्दा हुए।

गुरु साहब ने हँसकर कहा, ''आपको समझाने के लिए मैंने यह सारा कौतुक किया। गधे के ऊपर शेर की खाल डालने से गधा शेर नहीं बन जाता तो कपड़े रंगकर कौन महात्मा बन जाएगा?''

लोक डरावन कारणे तिन भेख बनाया
निर उद्यम टुकड़ा खावड़ा ओह बाबा नाम धराया

भेष तो लोगों को डराने के लिए बनाया होता है। अपना कमाना छोड़कर लोगों का खाना शुरु कर देते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

गृही का टुक्कर बुरा नौं नौं उंगल दाँत
भजन करे तो उबरे नहीं तो कड्डे आँत

गृहस्थी की रोटी पचाना खाला जी का बाड़ा नहीं। बीबीयाँ किसी को खाना मुफ्त में नहीं देती। हमारा जातिय तजुर्बा है कि घर में बच्चा बीमार हो, भाई रोटी लेने के लिए आता है तो बीबी रोटी बच्चे के सिर पर वारकर भाई को देती है। जो उस रोटी को खाएगा उस पर जरूर असर होगा। सन्त–महात्मा जब भी संसार में आते हैं वे दस नाखूनों की कमाई करते हैं और हम सबको कहते हैं कि आप दस नाखूनों की मेहनत से अपना और अपने बच्चों का पेट पालें।

जैसा खाईऐ अन्न वैसा होय मन।

अगर आप बुरे तरीके से अन्न–पानी कमाएंगे तो उसका असर आपके बच्चों के ऊपर होगा। आपकी औलाद कभी भी आपकी कहेकार नहीं होगी। बहुत से मुलाजिम देखें हैं जो रिश्वत लेकर अच्छी जायदाद बना लेते हैं,

उनके बच्चे बड़े होकर उनकी इज्जत नहीं करते। फिर वे कहते हैं कि हमने इन बच्चों को बहुत प्यार से पढ़ाया है लेकिन ये बच्चे हमारे कहेकार नहीं। यह सुनकर कई बार चुप कर जाना पड़ता है अगर कोई सुने तो समझा भी देता हूँ कि आपने इन्हें कैसा अन्न खिलाया है?

तुलसी साहब कहते हैं, ''पराया खाना छोड़ दें नहीं तो जिसका खाया है उसका जरूर देना पड़ेगा।'' आप महात्माओं की जिंदगी पढ़कर देख लें सब सन्त–महात्माओं ने दस नाखूनों की किरत की। कबीर साहब ने कहा थाः

मर जाऊ माँगू नहीं अपने तन के काज

बेशक जान निकल जाए लेकिन किसी के आगे हाथ नहीं फैलाऊँगा। कबीर साहब ने सारी जिंदगी ताना बुना। गुरु नानकदेव जी ने करतारपुर गाँव में खेती की, अपनी और अपने बच्चों की परवरिश की, जाते हुए कह गएः

गुरु पीर सदाए मंगण जाए ताँके मूल न लग्गी पाए
घाल खाए कुछ हत्थों दे नानक राह पछाणे से

परमात्मा उसके लिए दरवाजा खोलेगा जो दस नाखूनों से मेहनत करके खाता है और उसमें से साध–संगत की सेवा भी करता है। महात्मा दुनिया में एक नमूना बनकर पेश आते हैं और सेवकों को भी यही उपदेश करते हैं कि आप इस तरह करें तभी परमात्मा दरवाजा खोलेगा।

आप लोगों को धोखा दे सकते हैं लेकिन अंदर बैठा परमात्मा धोखा नहीं खाता। आप यह दिमाग से निकाल दें अगर दस–बीस आदमी हमें महात्मा कहने लग जाएं तो हम महात्मा बन जाएंगे। जो यहाँ अनपढ़ हैं वे आगे जाकर भी अनपढ़ ही रहेंगे। जो यहाँ डाकू, चोर हैं या किसी का खाते हैं मरने के बाद परमात्मा उन्हें महात्मा की डिग्री नहीं देता, आप नेक कमाई करें।

फरीद साहब ने हमें प्यार से समझा दिया कि आप अपनी नीयत को साफ करें, यह नाम की कमाई से ही साफ हो सकती है। आपको जंगलों–पहाड़ों में जाने की जरूरत नहीं आपको परमात्मा मिल सकता है।

हमें भी चाहिए कि हम सन्त–महात्माओं की बानी को समझने पर जोर दें। कोई बानी यह नहीं कहती कि आप दिन–रात तोते की तरह पढ़ते जाएं। महात्मा कहते हैं कि पढ़े बिना हमें समझ नहीं आती लेकिन हम जो पढ़ते हैं उसे समझें कि बानी हमें कहाँ लेकर जा रही है। गुरु नानक साहब कहते हैंः

जिसका गृह तिस दीया ताला कुंजी गुरु सौंपाई
अनिक उपाय करे नहीं पाए बिन सतगुरु शरणाई

जिस परमात्मा ने यह देह बनाई है उसने ताला लगाकर कुंजी गुरुमुखों के हवाले कर दी है। सन्त महात्मा आकर हमें कोई नई बात नहीं बताते। सन्त–महात्माओं ने 'शब्द–नाम' का होका दिया है, वह शब्द नाम का प्रचार करते हैं। हमें भी चाहिए कि हम इस इंसानी जामें से फायदा उठाएं पता नहीं यह जामा फिर मिले या न मिले? कबीर साहब कहते हैंः

मानस जन्म दुलर्भ है होत न बारम्बार
ज्यों वन फल पक्के भोंऐ गिरे बोहर न लग्गे डार

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899